

Dr.Uttam Kumar

SRAP College,Barachakia

Mob no-8210561032

Faculty -Commerce

Subject -Business Organisation

Class -2nd Semester

Session-2023-27

विश्लेषणात्मक क्रियाओं की पृष्ठभूमि है। द्वितीय भाग व्यवहारिक सिद्धान्त (Realistic Theory) है, जो कभी प्रकाशित ही न हो सकी। वेबर ने उद्योगों के स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाले कारणों को निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया है।

(1) **प्राथमिक कारण (Primary Causes)**—ये प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय विवरण पर प्रभाव डालते हैं, अतः इन्हें प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय कारण (Regional Causes) कहते हैं।

(2) **गौण कारण (Secondary Causes)**—जो उद्योगों के पुनर्वितरण पर केन्द्रीयकरण एवं विकेन्द्रीकरण (Agglomerative and Deagglomerative Factors) की रीतियों द्वारा प्रभाव डालते हैं गौण कारण कहलाते हैं।

प्राथमिक अथवा क्षेत्रीय कारण (Primary or Regional Causes) विविध क्षेत्रों में उत्पादन की लागत भिन्न-भिन्न रहती है। अतः उद्योग का स्थानीयकरण उस क्षेत्र में होता है जहाँ उत्पादन की लागत सबसे कम हो, अल्फ्रेड वेबर के अनुसार—(1) यातायात लागत (Transport Cost), (2) श्रम लागत (Labour Cost) उत्पादन लागत की दो ऐसी मर्दे हैं जो उद्योगों के स्थानीयकरण को प्रभावित करती हैं।

(1) **यातायात लागत (Transport Cost)**—यातायात की लागत को मुख्यतया दो तत्व प्रभावित करते हैं—(i) यातायात किया जाने वाला भार (Weight to be Transported), (ii) तय की जाने वाली दूरी (Distance to be covered) साधारण उद्योगों का स्थानीयकरण ऐसे स्थान पर होगा जहाँ पर (1) कच्चे माल ईंधन को एकात्रित करने, तथा (2) निर्मित माल को बाजार तक पहुँचाने पर यातायात व्यय न्यूनतम हो। किसी भी उद्योग में उत्पन्न क्रियाएँ निम्नलिखित दो बातों पर निर्भर रहती हैं—

(i) उद्योग के उपयोग में आने वाले कच्चे माल की प्रकृति (Nature of Materials) और (ii) कच्चे माल को निर्मित माल में परिवर्तित करने की प्रकृति (Nature of their transformation)।

कच्ची सामग्री का वर्गीकरण—वेबर ने कच्ची सामग्री को निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया है :

(i) **साधारण या कच्चा माल**—यह कच्चा माल प्रायः सभी स्थानों पर सफलतापूर्वक उपलब्ध हो जाता है, अतः औद्योगिक स्थानीयकरण पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जैसे—मिट्टी, पानी, ईट आदि।

(ii) **विशेष स्थानीय कच्चा माल**—इसके अन्तर्गत वे कच्चे पदार्थ आते हैं जो किसी स्थान विशेष में ही पाये जाते हैं, उदाहरणार्थ—कोयला, लकड़ी, चूना, लोहा आदि। इस प्रकार का कच्चा माल प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध न होने के कारण औद्योगिक स्थानीयकरण को प्रभावित करता है। जहाँ पर विशेष या स्थानीय कच्चा माल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है, उद्योग प्रायः उन्हीं स्थानों पर केन्द्रित हो जाते हैं।

स्थानीय कच्चे माल के प्रकार (Types of Local Raw Material)

स्थानीय कच्चा माल निम्न दो प्रकार का होता है—

(i) **शुद्ध कच्चा माल (Pure Raw Material)**—यह वह माल होता है जिसमें माल के निर्मित हो जाने पर भी भार में कोई विशेष अन्तर नहीं आता, अर्थात् कच्चे व निर्मित माल का भार प्रायः समान ही रहता है, उदाहरणार्थ—रेशम, ऊन, रुई आदि। शुद्ध कच्चा माल स्थानीयकरण को विशेष प्रभावित नहीं करता क्योंकि सब मिलाकर उन पर यातायात व्यय लगभग समान ही रहता है। भले ही उद्योगों का स्थानीयकरण कच्चे माल की प्राप्ति के समीप या बाजार के निकट हो।

(ii) **सकल कच्चा माल (Gross Raw Material)**—सकल कच्चा माल वह है जिसका भार माल निर्मित हो जाने पर पहले से कम हो जाता है, उदाहरणार्थ—कोयला, गन्ना, कच्चा लोहा आदि। इस प्रकार के सकल कच्चे माल उद्योगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। भारत में इनका ज्वलन्त उदाहरण लोहा एवं इस्पात उद्योग आदि है। दूसरे शब्दों में सकल कच्चा माल उपयोग करने वाले उद्योग कच्चे माल के स्रोतों की ओर आकर्षित होते हैं जबकि शुद्ध कच्चे माल का उपयोग करने वाले उद्योग प्रायः बाजारों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

पदार्थ सूचकांक (Material Index)—श्री वेबर ने सकल कच्चे पदार्थों (Gross Raw Materials) की कच्ची अवस्था तथा निर्मित अवस्था के भार के अनुपात को पदार्थ सूचकांक (Material Index) कहा है। यह सूचकांक जितना ही अधिक होगा उद्योगों की प्रवृत्ति कच्चे माल के केन्द्रों की ओर आकर्षित होगी तथा सूचकांक कम होने की स्थिति में स्थानीयकरण उपभोग केन्द्र या बाजार के समीप होगा। इस सम्बन्ध में उन्होंने निम्नलिखित सूत्र का प्रतिपादन किया है—

$$\text{सामग्री निर्देशांक} = \frac{\text{कच्चे माल का भार}}{\text{निर्मित माल का भार}}$$

इन दोनों का अनुपात जितना अधिक होगा उद्योगों की प्रकृति कच्चे माल की उपलब्धता वाले स्थानों पर केन्द्रित होने की उतनी ही अधिक होगी। यदि सामग्री निर्देशांक एक से अधिक होता है तो उद्योगों के स्थानीयकरण की प्रवृत्ति कच्चे माल के स्रोतों